ISSN: 0973-0583

फणीश्वरनाथ रेणु का राजनीतिक दृष्टि : एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ० पूजा कुमारी
इतिहास विभाग, श्री अरविन्द महिला कॉलेज, पटना

सारांश

फणीश्वरनाथ 'रेणु' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहें हैं। इन्होंने अपने विचार को विभिन्न प्रकार के साहित्यों में प्रस्तुत किया है। चूँकि फणीश्वरनाथ रेणु एक स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार और सामाजिक चिंतक थे इसलिए इन्होंने भारत की स्वतंत्रता और लोकतंत्र की स्थापना में अपनी रचनाओं के माध्यम से राजनीतिक विचार प्रस्तुत किया। किसी भी विचारक के मन मस्तिष्क पर वहाँ के तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है। इस नियम का अपवाद फणीश्वरनाथ रेणु नहीं बन पाये। इनके मन-मस्तिष्क पर भी तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का व्यापक प्रभाव पड़ा। वस्तुत: इन्होंने अपने विचार के उपन्यास, कहानी, कहानी संग्रह, संस्मरण और रेखा चित्र एवं रिपोर्ताज के रूप में प्रस्तुत किया। अत: इन सभी रचनाओं से फणीश्वरनाथ 'रेणु' का राजनीतिक दृष्टि झलकता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने 63 कहानी, 5 कहानी संग्रह, 8 उपन्यास और 4 संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज के माध्यम से अपने विचार को प्रस्तुत किया है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म परतंत्र भारत में 4 मार्च 1921 में औराही हिंगना, जिला पूर्णियाँ (अररिया) में हुआ था। इनकी मृत्यु 11 अप्रैल 1977 को पटना में हुई थी। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का घर स्वतंत्रता सेनानियों का मिलन स्थल था। इसका प्रभाव फणीश्वरनाथ 'रेणु' के राजनीतिक विचार पर पड़ा। यही कारण था कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' के मन में बचपना अवस्था से ही अंग्रेजों से मुक्ति दिलाने की प्रेरणा मिली। यह प्रेरणा राजनीतिक स्वतंत्रता को दर्शाती है। जब फणीश्वरनाथ 'रेणु' मात्र 9 साल के थे तब इन्दिरा गाँधी द्वारा स्थापित वानर सेना में शामिल होकर भारत को स्वतंत्र कराने में जुट गये। इस प्रकार हम यह पाते हैं कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' गाँधी तथा अन्य नेताओं से प्रभावित होकर सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में उल्लेखनीय योगदान दिया। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' भारत को स्वतंत्र कराने में उल्लेखनीय योगदान दिया और अपने विचार को साहित्यों के माध्यम से जनजागरण किया। अन्तत: 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ और फणीश्वरनाथ 'रेणु' मजबूत लोकतंत्र की स्थापना में जुट गये।

शब्द कुंजी- राजनीतिक दृष्टि, परतंत्रता, लोकतंत्र, सामाजवादी, समतावादी।

20वीं सदी में भारत की भूमि पर कई ऐसे जनसाधारण का जन्म हुआ जिन्हें परतंत्र भारत में ऐतिहासिक पुरुष बना दिया। इसी प्रकार के ऐतिहासिक पुरुष फणीश्वरनाथ 'रेणु' हुए जिन्होंने परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने के लिए बचपन से ही संघर्ष किया। इसी संघर्ष ने फणीश्वरनाथ 'रेणु' को स्वतंत्रता सेनानी से प्रसिद्ध साहित्यकार बना दिया। फणीश्वरनाथ 'रेणु' साहित्याकार से पहले स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने अपने विचार को सामाजिक दृष्टि, आर्थिक दृष्टि और राजनीतिक दृष्टि से प्रस्तुत किया।

फणीश्वरनाथ रेणु' का जन्म बिहार की भूमि पूर्णियाँ के गाँव औराही-हिंगना में 4 मार्च 1921 को तथा इनकी मृत्यु 11 अप्रैल 1972 को पटना में हुई। इस अवधि में इन्होंने अपनी राजनीतिक दृष्टिकोण को व्यवहार और साहित्य में प्रस्तुत किया। फणीश्वरनाथ 'रेणु' की 63 कहानियाँ [6], 5 कहानी संग्रह[4], 8 उपन्यास[5] और 4 संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज[6] से पता चलता है कि उनकी राजनीतिक दृष्टि समाजवाद, मार्क्सवाद और लोकतंत्र में केन्द्रित था। इन पर गाँधी, राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और उग्रवादी नेताओं का प्रभाव था।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित होकर स्वराज्य के लिए संघर्ष भी किया और अपने विचारों को साहित्य में भी स्थापित किया। इनके साहित्य से राजनीतिक धारणा और मान्यताएँ परिलक्षित होती है।

इस सन्दर्भ में, 'प्रकाशन समाचार' (फरवरी, 1955) में प्रकाशित 'मैला आँचल' के विज्ञापन की यह पंक्तियाँ द्रष्टव्य है - बिहार के पूर्णियाँ जिले के एक छोटे से गाँव की कहानी जिसमें भारतीय ग्राम्य जीवन देश की सामाजिक व राजनीतिक उथल-पुथल से झकझोर, अपनी परम्परागत विवशताओं से आक्रान्त लेकिन अपनी सीमाओं को तोड़कर उफनने के प्रयास में और नए युग के साथ कदम मिलाकर बढ़ने को अधीर गर्म-ठंडी साँसे लेता हुआ स्पष्ट दीख पड़ेगा। जन-जीवन के अतिरिक्त इस उपन्यास का कोई बाधक नहीं है। 'मैला आँचल' की कथावस्तु के यथार्थ से आप पराभूत हो जायेंगे।[7]

फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपनी कई रचनाओं में आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन के चित्रण के साथ राजनीतिक जीवन का चित्रण भी प्रस्तुत किया है। यह चित्रण फणीश्वरनाथ 'रेणु' का प्रत्यक्ष देखा हुआ चित्रण है। जिन उपन्यासों में इन्होंने गाँवों का चित्रण किया है उनमें प्रस्तुत है- 'मैला आँचल' तथा 'परती परिकथा'। मैला आँचल में पूर्णियाँ के मेरीगंज का आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन का चित्रण किया गया है। परती परिकथा में पूर्णियाँ जिला के प्राणपुर गाँव का चित्रण प्रस्तुत किया गया है। चूँकि फणीश्वरनाथ 'रेणु' तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति को भली-भाँति समझते थे इसलिए इनकी रचनाओं में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के मानस पटल पर कई विचारधाराओं का संगम था। वे राष्ट्रवादी थे। वह मार्क्सवादी विचारधारा से भी प्रभावित थे। वे गरम दल के नेताओं में भी शामिल थे। उनका विचार गाँधीवादी विचारधारा से भी प्रभावित था। वे समाजवादी विचारधारा के भी समर्थक थे।

इन्हें राष्ट्रवादी इसलिए कहा जा सकता है कि इसके घर पर स्वतंत्रता सेनानियों का जमघट लगता था। दूसरी बात यह है कि जब वे मात्र 9 साल के थे तब वे इन्दिरा गाँधी द्वारा गठित वानर सेना के सदस्य बने और स्वतंत्रता के लिए कार्य किया। अतः इस तथ्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' राष्ट्रवादी विचारधारा के स्वतंत्रता सेनानी थे। चूँकि इनकी रचनाओं में गरीबों की स्थिति का चित्रण मिलता है, जो मार्क्सवादी विचारधारा की ओर संकेत करता है। जिन समस्याओं को इन्होंने चित्रण किया है, ये सभी समस्याएँ पूर्णतः ग्रामीण एवं यथार्थवादी है। इसके अतिरिक्त गाँव की विभिन्न जातियाँ उनके आपसी मनमुटाव और झगड़ों, उनकी अज्ञानता, अंधविश्वास, पक्षपात, भ्रष्टाचार, सरकारी कर्मचारियों की घूसखोरी, स्थानीय त्योहारों, लोकगीतों और लोककथाओं का भी उपन्यास में सूक्ष्म चित्रण हुआ है। 'मैला आँचल' और 'परती-परिकथा' के लेखक में अंचल का मोह प्रबल है।[8] अतः इस तर्क के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' मार्क्सवादी थे, इसलिए वे गरम दल से भी प्रभावित थे।

चूँकि फणीश्वरनाथ 'रेणु' का नाम पूर्णियाँ जिला के गरम दल की सूची में शामिल था और इन्हें इसी सूची के आधार पर गिरफ्तार भी किया गया था। इसलिए वे गरम दल से भी प्रभावित थे। फणीश्वरनाथ 'रेणु' जब बनारस में पढ़ाई कर रहे थे तब उस समय उन्हें कई समाजवादी नेताओं से सम्पर्क हुआ था, जैसे- आचार्य नरेन्द्र देव, राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण इत्यादि। अतः यह कहा जा सकता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' एक समाजवादी स्वतंत्रता सेनानी थे।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' की राजनैतिक धारणा और मान्यताएँ उनकी रचनाओं में देखी जा सकती है। इन पर परिवार, समाज और ब्रिटिश कालीन भारत का प्रभाव था। इन्होंने आजादी के लिए बचपन से ही अंग्रजों के खिलाफ कदम उठाया। यह कदम वानर सेना के रूप में हो, असहयोग आंदोलन के दौरान हो अथवा अगस्त क्रांति में ही क्यों न हो। इतना ही नहीं इन्होंने अपने देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़े ही, साथ ही नेपाल में भी लड़ाई लड़े।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' साहित्यकार तो थे ही साथ ही वे जन्मजात जननेता भी थे। जननेता होने का प्रमाण इनके कई रूपों में देखा जा सकता है, जैसे- स्वतंत्रता सेनानी के रूप में, समाजसेवी के रूप में, साहित्यकार के रूप में और आजादी के बाद बिहार विधानसभा चुनाव लड़ने के रूप में। फणीश्वरनाथ 'रेणु' चुनाव तो दो बार लड़े लेकिन एक बार भी नहीं जीत सके। रेणु

चुनाव जीत नहीं सके पर सच्चाई यह है कि उन्होंने व्यवस्था परिवर्तन हेतु मैदान में उतरकर सच्चा प्रयास किया।[9] जिस उद्देश्य से फणीश्वरनाथ 'रेणु' चुनाव लड़े उस उद्देश्य से पता चलता है कि चुनाव में रेणु की हार नहीं हुई बल्कि उस शोषित, पीड़ित जनता की हार हुई जो वर्षों, दशकों और सदियों से हार रही है। रेणु की कहानियों में राजनीतिक के अनेक रंग और अनेक स्तर दिखाई पड़ता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' की रचनाओं में खासकर कहानियों में जो राजनीतिक तत्व है उसकी विशेषता यह है कि वह कालजयी है। वह न आज पुराना हुआ न आने वाले कई दशकों में पुराना होगा। इनकी राजनीतिक तत्व आज और भविष्य के लिए भी महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। उनकी कहानी को पढ़ने से यह पता चलता है कि जो कहानी सत्तर साल पहले लिखी गयी हो वह कहानी आज भी जीवन्त है। इसकी जीता-जागता उदाहरण कहानी की इन पंक्तियों में देखने योग्य है- ''आज मनमोहन एम.ए. है। विश्वविद्यालय ने जिस वर्ष उसे इतिहास में प्रथम श्रेणी घोषित किया, उसी वर्ष भारत सरकार ने उसे शांति का शत्रु कहकर नजरबन्द भी बना दिया।[10] ठीक ऐसी ही घटना आज भी भारत के शीर्ष विश्वविद्यालयों में देखने को मिलता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' जिस दौर से सृजनशील थे तब से आज तक न जाने गंगा-यमुना में कितना पानी बह गया हो लेकिन इस देश की राजनीति में कोई फर्क नहीं आया है। तभी तो उस दौर में भी सरकार की गलत नीतियों का विरोध करने वाले एम.ए. के छात्र को 'शांति का शत्रु' की उपाधि से मिलती है तो आज अकादमिक जगत में डॉक्टर की उपाधि से विभूषित होने वाले छात्र सरकार की दृष्टि में टुकड़े-टुकड़े गैंग के सदस्य के रूप में चिन्हित किये जाते हैं।[11]

फणीश्वरनाथ 'रेणु' वर्तमान के साथ-साथ भविष्य को भी देख रहे थे। निश्चित रूप से उन्होंने यह जान लिया था कि भारत के नीति-निर्धारक नेतागण अपने खिलाफ तर्कसंगत सवालों का हमेशा विरोध करेंगे और सवाल पूछने वालों के लिए वे हमेशा कारागार के दरवाजे खोल कर रखेंगे। यह बात 21वीं सदी के राजनीति में विश्व स्तर पर प्रदर्शित होती है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने अपने कहानी में साम्प्रदायिकता और मीडिया पर सवाल खड़े किये हैं। धर्म के नाम पर हो रही राजनीति पर लिखते हुए वे अपनी एक अन्य कहानी में लिखते हैं- मुखिया नेशनल गार्ड और यह 'राष्ट्र सेवक दल' मुस्लिम और हिन्दू पूंजीपतियों की डूबती हुई नैया को बचा सकेगा? इस गाँव में भी तो काली टोपी लगाए शाम को कुछ लड़के लाठी घुमाया करते थे। आज गाँव में महामारी फैली हुई है। कहाँ हैं, वे? इससे यह पता चलता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' भारत की जनता को यही समझाना चाहते हैं कि जरूरत की स्थिति में कोई नेता काम नहीं आयेगा बल्कि मानवता ही काम आएगी। रेणु का यह भी मानना था कि राजनीति से अछूता कोई नहीं है। वे बच्चों से लेकर जानवर तक में राजनीति ढूँढ़ लेते हैं। खासकर भारत जैसे देशों में जहाँ भूखमरी और बेराजगारी दशकों से यह भीषण समस्या के रूप में जीवन्त रही है। वह केवल पेट भर खाने के लिए भी तिकड़म भिड़ाने पड़ते हैं और यह तिकड़म एक प्रकार की राजनीति ही है। अर्थात् किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तिकड़म करना भी राजनीति ही है।

अपनी कहानी 'ताँबे एकला चलो रे' में वे 'किसान महाराज' जेसे पशु को भी राजनीति से जोड़ देते हैं। पूंजीपति जमींदारों के अत्याचार के खिलाफ महाराज अकेले खड़े हो जाते हैं और आखिर में वीरगति को प्राप्त करते हैं। इसी दौरान रेणु बड़ी कलात्मकता के साथ 'किसान महाराज' को भी राजनीति से जोड़ देते हैं और उनकी झंडे पर चित्रित आकृति की कुछ इस तरह व्याख्या करते हैं। मानों 'किसान महाराज' भारत के तमाम राजनीतिक दलों के प्रतीक हों। ये पंक्तियाँ देखा जा सकता है - 'दरोगा साहब ने 'किसान महाराज' के सिंगों को हँसिया समझा ....पैरों को हल.....पूँछ को चक्र ....मुँह को हथौड़ा.....।[12] इस तथ्य से स्पष्ट है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' का साहित्य में कोई भी राजनीतिक से अछूता नहीं है। यह विशेषता रेणु की रही है कि वे अपने हिसाब से सभी चरित्रों को राजनीति से जोड़ते हैं। अत:फणीश्वरनाथ 'रेणु' के प्रत्येक साहित्य का संबंध प्रत्यक्ष था। अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति से है। इन्होंने एक तरु शासक के रूप में

पूंजीपति को और दूसरे तरफ याोषित वर्ग के रूप में आम लोगों को रखा है।

'पार्टी का भूत' जो 194513 में लिखी गयी थी और 'आत्म-साक्षी' जो 196514 में लिखी गई थी ये दोनों रचनाएँ फणीश्वरनाथ 'रेणु' की राजीतिक दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण है। इन दोनों कहानियों के माध्यम से फणीश्वरनाथ 'रेणु' कम्युनिस्ट पार्टी को समझने की कोशिश की है। जैसा कि लेखक या इतिहासकार के संबंध में ई.एच. कार अपनी पुस्तक 'इतिहास क्या है' में इस प्रकार लिखा है- इतिहास में हमें जांचे परखे तथ्यों का एक संग्रहित रूप मिलता है। लेकिन फणीश्वरनाथ 'रेणु' आँखों देखी घटना को साहित्यकार के रूप में चित्रण किया है। इन्होंने 20 वर्षों में कम्यूनिस्टों के बारे में जो समझा, जो अनुभव किया उसे बखूबी से 'पार्टी का भूत' और 'आत्म-साक्षी' जैसे श्रेष्ठ कहानियों में चित्रण किया है। ''पार्टी का भूत' में फणीश्वरनाथ 'रेणु' के द्वारा कम्यूनिस्टों को लताड़ा गया है।

'पार्टी का भूत' में एक ओर जहाँ फणीश्वरनाथ 'रेणु' हल्के-फुल्के अंदाज में कम्यूनिस्टों को लताड़ते हुए नजर आते हैं वहीं दूसरी ओर आत्म-साक्षी में उन्होंने कम्यूनिस्टों पर कठोर प्रहार किए हैं। सही तथ्य यह है कि रेणु की इन दोनों कहानियों में भले ही प्रहार कम्यूनिस्टों पर है। लेकिन जिन स्थितियों का चित्रण फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने किया है, वही स्थिति सभी दलों की है। यह स्थिति मौजूदा समय में भी सभी दलों में बनी हुई है।

रेणु ने राजनीति में गहरे रूप से उतर कर यह अनुभव किया था कि विचारधारा गौण हो चुकी है। ऐसा इसलिए कि आज भी राजनीति में विचारधारा गौण है। निश्चित रूप से फणीश्वरनाथ 'रेणु' का यह विचार राजनीति दूरदृष्टता को व्यक्त करता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' पार्टी का भूत में लिखते है, ''कुछ दिनों के बाद मालूम हुआ कि कम्युनिस्ट पार्टी वाले अपने मेम्बरों की रिहाई के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। उनके सुकर्मों को देख-सुनकर पूरा भरोसा हुआ कि वे अपने मेम्बरों को अवश्य छुड़वा लेंगे। अत: एक दिन छिपकर कम्यूनिस्टों को याद आया कि वे मुझे भूल न जाएँ।[15] फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने इस पंक्तियों में कम्युनिस्टों की चरण अवसरवादिता की पोल खोली है। अवसरवादिता आज हर नेताओं में कूट-कूट कर भरा हुआ है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' यह पोल खोलते हुए लिखते हैं कि वह व्यक्ति जो जेल में सोशलिस्टों की बहुमत देखकर सोशलिस्ट बना फिरता था। जब देखता है कि कम्युनिस्ट जेल से छूट रहा है तो पुन: वामपंथी चोंगा ओढ़ लेता है। यह व्यवहार अवसरवादी व्यवहार कहलाता है। फणीश्वरनाथ 'रेणु' का यह अनुभव आज शत-प्रतिशत सही साबित होता है। ऐसा इसलिए कि अवसरवादिता के कारण ही यही 21वीं सदी में कुछ नेताओं को कई उपाधि दी गई है, जैसे- बीना पेंदी का लोटा, मोलम वैज्ञानिक, पल्टू राम इत्यादि।

रेणु ने आत्म-साक्षी में कम्यूनिस्टों पर पूर्ण रूप से हमला किया है और कम्यूनिस्टों की प्रगतिशीलता की धज्जियाँ उड़ा दी है। लेकिन रेणु ने यह साबित किया कि कम्यूनिस्ट प्रगतिशील नहीं है वे दिखलाते हैं कि कहने को वामपंथी प्रगतिशील है। लेकिन सत्य तथ्य यह है कि वे भी जाति संबंधी ऊँच-नीच का फर्क वैसे ही मानते हैं जैसे कोई सामान्य शक्ति मानता हो। अपने ही सबसे पुराने कार्यकर्ता गनपत को वे जिस हाल में छोड़ देते हैं वह देखने योग्य है- ''सात दिन में गाँव का बच्चा-बच्चा पूछ गया। मगर कोई साथी कामरेड झांकी मारकर देखने के लिए भी नहीं आया।[16] जब यह स्थिति कम्युनिस्टों की है तो भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले गनपत का इस दल से मोह भंग क्यों न होता। वे लिखते हैं-''सिर्फ सात दिन का बुखार नहीं, गनपत को लगता है, पैंतीस साल से चढ़ा हुआ ज्वर आज उतरा है। इतने दिनों तक एक 'अर्द्ध-सुरंग' में वह चल रहा था- बेमतलब, बेकार अकारथ।[17] यह स्पष्ट है कि राजनीतिक मोह भंग की कहानी है।

रेणु ने अपनी 'वन्डरफूल स्टूडियो' में ऐसे ही सभी चित्र चित्रित किये हैं। इन पंक्तियों को देखा जा सकता है- 'ग्यारह बजे रात को मिनिस्टर साहब आये। हमने झंडोतोलन वाला पर्दा लगा दिया, हमारे आर्टिक्ट ने झंडे की जगह ब्लॉक कर दिया, वहीं मिनिस्टर साहब ने वृक्ष रोपण किया। झंडोतोलन के बदले वृक्ष-रोपण ही सहीं।''[18] इससे साफ पता चलता है कि जिस देश में जनता दो जून की रोटी पाने के लिए संघर्षरत हो वहाँ

अकूत सम्पत्ति के बल पर राजनेता दिन को रात बनाने की शक्ति रखते हैं। जनता और राजनेता की स्थिति के संबंध में भारत में यह कहावत मशहूर है- जनता खाकपति और नेता खरबपति। आज के चुनाव में जो नेता विजेता अथवा उपविजेता होते है। उनके पास भी अकूत सम्पत्ति रहती है।

निष्कर्ष:

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के विचार एवं इनकी रचनाओं से पता चलता है कि फणीश्वरनाथ 'रेणु' स्वतंत्र भारत के समर्थक, स्वच्छ लोकतंत्र में आस्था रखने वाले मार्क्सवादी और समाजवादी दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति थे। इन्होंने अपने राजनीतिक विचार को व्यवहार में उतारने के लिए दो बार चुनाव में उम्मीदवार के रूप में उतरे, लेकिन दोनों बार इन्हें हार का सामना करना पड़ा। इससे इन्होंने यह साबित किया कि भारत में सही लोकतंत्र की स्थापना स्थापित नहीं हो सकती। ऐसा इसलिए कि जबतक चुनाव में बाहुबल, पूंजीबल और भ्रष्टाचार रहेगा तब तक भारत में सही लोकतंत्र की स्थापना नहीं हो सकेगी। गरीबों के नाम पर चुनाव में लड़ा जायेगा लेकिन उसकी स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी। अत: फणीश्वरनाथ 'रेणु' की राजनीतिक दृष्टि स्वच्छ फणीश्वरनाथ पर केन्द्रित था जिसमें हर नागरिक को लोकतंत्र का प्रसाद समान रूप से प्राप्त हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. सोमा बंधोपाध्याय, वंचितों के कथाकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ॰ 32
2. भारत यायावार, रेणु का जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृ॰7
3. सोमा बंधोपाध्याय, पूर्वोक्त, पृ॰ 52
4. *वही*
5. *वही*, पृ॰ 52-53
6. वही, पृ॰ 53
7. भारत यायावर, रेणु रचनावली, द्वितीय खंड, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985, पृ॰ 8
8. सोमा बंधोपाध्याय, *पूर्वोक्त*, पृ॰ 136
9. कृष्णा अनुराग, आलेख, साहित्य यात्रा /अप्रैल-जून, 2021, पृ॰ 137
10. मधुकर सिंह, रेणु की सम्पूर्ण कहानियाँ, भाग-1, साहित्य संसद प्रकाशन, 2006, पृ॰ 83
11. कृष्ण अनुराग, पूर्वोक्त, पृ॰ 138
12. कृष्ण अनुराग, इतिहास, मजहब और आदमी, आलेख, साहित्य यात्रा, अप्रैल-जून, 2021, पृ॰ 84
13. मधुकर सिंह, पूर्वोक्त, पृ॰ 296
14. सोमा बंधोपाध्याय, पूर्वोक्त, पृ॰ 49
15. *वही*, पृ॰ 51
16. ई.एच. कार, इतिहास क्या है, नई दिल्ली, 1976, पृ॰ 59
17. मधुकर सिंह, पूर्वोक्त, भाग-2, साहित्य संसद प्रकाशन, संस्करण 2006, आत्मसाक्षी, पृ॰ 116
18. *वही*
19. मधुकर सिंह, रेणु की सम्पूर्ण कहानियाँ, वन्डरफूल स्टूडियो, पृ॰ 116